तौहीद क्या है?

लेखक

शेख़ुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अल किताब इंटरनेशनल

मुरादी रोड बटला हाउस जामिया नगर

नई दिल्ली-25

तौहीद क्या है ?

लेखक
शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अनुवाद
सै० शौकत सलीम

एस० एन० पब्लिशर्स
F-50B मुरादी रोड, बटला हाउस
जामिया नगर, नई दिल्ली - ११००२५

नाम किताब : तौहीद क्या है ?
नाम लेखक : शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
अनुवादक : सै० शौकत सलीम
तादाद : २०००
कीमत : १५/-
प्रकाशक : एस० एन० पब्लिशर्स, नई दिल्ली
26986973] 26985534

मिलने के पते :
१. अलकिताब इन्टर नेशनल, नई दिल्ली - २५
२. मकतबा तर्जुमान, ४११६ ऊर्दू बाजार, दिल्ली - ६
३. दारूल कुतुब अल सल्फीया, मटिया महल, दिल्ली - ६
४. दारूल मारिफ, मु० अली बिल्डिंग, मुम्बई - ३
५. मकतबा माज पत्थर गट्टी, हेदराबाद

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम

अल्लाह तुम पर दया करे, यह जान लो कि खालिस अल्लाह की इबादत करने का नाम तौहीद है यही रसूलों का दीन है और इसी दीन को अल्लाह ने पैग़म्बरों को देकर अपने बन्दों की हिदायत के लिए भेजा है। इनमें सबसे पहले रसूल हज़रत नूह अलैहि० हैं। अल्लाह ने इन्हें इन्हीं की क़ौम की ओर भेजा जबकि इनकी क़ौम ने वद्ध, सुवाअ, यग़्स, यउक, और नसर जो कि अपने ज़माने के बड़े नेक लोग थे की पूजा करनी शुरू कर दी थी और उन्हें बड़ा भारी और उंचा दर्जा दे रखा था।

सबसे अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं इन्होंने उन नेक लोगों के बुतों को तोड़ा जो कि नूह की क़ौम और उसके बाद आने वालों ने इबादत के लिए बना रखे थे। अल्लाह ने आपको एक ऐसी क़ौम की ओर भेजा जो बड़े इबादत करने वाले, हज करने वाले सदक़ा ख़ैरात करने वाले और अल्लाह का अधिकता से ज़िक्र करने वाले थे मगर इन सारी इबादत के बावजूद अपने और अल्लाह के बीच कुछ लोगों को माध्यम बनाया हुआ था। और कहते थे कि हम इनसे अल्लाह के निकटता हासिल करते हैं और अल्लाह के यहां इनको अपनी सिफारिश करने वाला मानते हैं जैसे हज़रत ईसा, मरयम, फरिश्तों और कुछ नेक लोगों को अपना ज़रिया बनाते थे। इन हालात में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपना रसूल बनाया ताकि वे इनके बाप हज़रत इब्राहीम अलैहि० के दीन को जिन्दा करें और इन्हें बताएं की यह निकटता और विश्वास अल्लाह

का ही हक़ है। अल्लाह के अलावा किसी और के लिए यह आस्था उचित नहीं, और तो और किसी नज़दीकी फरिश्ते या किसी ऊंचे मरतबे के पैग़म्बर को भी यह हक नहीं दिया जा सकता कि वे अल्लाह और उसके बन्दों के बीच में वास्ता बने और अल्लाह उनके जरिये से अपने बन्दों की दुआओं, विनतियों और पुकार को सुने। अल्लाह तो हर बन्दे की पुकार सुनता है और इस प्रकार के वास्तों को पसन्द ही नहीं करता। वर्ना अरब के मुशरिकों को अल्लाह ने काफ़िर व मुशरिक की उपाधि क्यों दी जबकि वे इस बात की गवाही देते थे कि अल्लाह ही वास्तविक स्वामी व पैदा करने वाला है और उसका कोई साथी नहीं, वही रिज़्क़ देता है वही जिन्दा करता है और उसी के अधिकार में मौत है। सारे कामों की बागडोर उसी के हाथ में है सातों जमीन व आसमान में, की हर चीज उसकी गुलाम हैं और उसके अधीन हैं मगर इस अकीदे के साथ साथ वे चूंकि अल्लाह के बीच वास्तों और वसीलों को मानते थे इसलिये अल्लाह ने उन्हें मुशरिक कहा -

यदि किसी को इस बारे में संदेह है कि वे ईमान नहीं रखते थे तो फिर उनके लिए कुरआन के तर्क दलीलें मौजूद हैं। वे अल्लाह पर पूरा ईमान रखते थे केवल बीच में उन्होंने कुछ वास्ते और वसीले बना रखे थे।

चुनांचे अल्लाह फरमाता है :

"ऐ नबी सल्ल० इनसे पूछो तुम्हें जमीन व आसमान से रिज़्क़ कौन पहुंचाता है आंखों व कानों का मालिक कौन है अर्थात ये किसने बनाए हैं कौन जिन्दों को मुरदों से निकालता है और मुर्दों को जिन्दों में से निकालता है। दुनिया के सारे कारोबार किस की तदबीर से चल रहे हैं, वे फौरन कहेंगे कि यह सब कुछ तो अल्लाह के अधिकार में है। ऐ नबी सल्ल० इनसे पूछो यदि मामला ऐसा ही है तो फिर तुम डरते क्यों नहीं उसे छोड़ कर ग़ैरों से मुरादें क्यों मांगते हो ? और उसे छोड़कर दूसरों के वास्ते और वसीले क्यों

तलाश करते हो ?"

(सूरः यूनुस : ३१-३२)

"ऐ नबी ! इनसे पूछो जमीन व आसमान और जो कुछ इनमें है यह किसका है और किसने बनाया है यदि तुम्हें इसके बारे में कुछ ज्ञान है बड़ी जल्दी कहेंगे कि यह सब कुछ अल्लाह का ही है तो फिर इनसे कह दीजिए कि तुम अल्लाह से डरते क्यों नहीं? ऐ नबी इनसे पूछो सातों आसमानों और अर्शे अज़ीम का मालिक कौन है वे फौरन कहेंगे कि यह अल्लाह का है इन से कहो कि फिर तुम अल्लाह से डरते क्यों नहीं ? ऐ नबी इनसे पूछो कि हर चीज़ की मिलकियत किसके हाथ में है यदि तुम्हें इसके बारे में कुछ पता है। वह सबको पनाह देता है और उसे किसी से मदद चाहने की जरूरत नहीं वह बेनियाज़ है बड़ी जल्दी ये लोग कहेंगे कि यह सब कुछ अल्लाह के लिए ही है इनसे कहो कि फिर तुम क्यों नहीं समझते क्या तुम पर किसी ने जादू कर दिया है ?

(अलमोमिनून : ८७-८९)

इसके अलावा असंख्य आयतें कुरआन मजीद में मौजूद हैं जो इस बात को बड़ी खुलासा करके पेश करती हैं। जब यह बात तर्क व दलील से साबित हो चुकी है कि मुशरिक तौहीद को मानते थे अर्थात वे यह समझते थे कि अल्लाह के सिवा कोई रब नहीं है इसके बावजूद अल्लाह ने इनको तौहीद परस्तों में से नहीं माना अल्लाह के नबियों ने जिस तौहीद की ओर इन्हें बुलाया था वह तौहीद इबादत से ताल्लुक रखती थी जिसको हमारे ज़माने के मुश्रिक आस्था से जोड़ते हैं जैसे कि वे रात और दिन अल्लाह को पुकारते थे और उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो फरिश्तों को पुकारते थे क्योंकि वे अल्लाह के करीबी हैं और इस्लाह व तक्वा में बहुत आगे हैं और उन्हें इसलिए पुकारते थे ताकि वे अल्लाह के पास इनकी सिफारिश करें या फिर वे कुछ नेक व बुजुर्ग लोगों को पुकारते थे जैसे कि उन्होंने 'लात' को पुकारना शुरू कर दिया। कुछ ने नबियों की

पूजा करनी शुरू कर दी जैसा कि ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहि० को अपना हाजितें सुनने वाला मान लिया और यह भी मालूम हो गया कि नबी करीम सल्ल० ने इनसे जंग इसी शिर्क पर की और इन्हें खालिस अल्लाह की इबादत की दावत दी जैसा कि अल्लाह ने इर्शाद फरमाया :

"अल्लाह के साथ किसी और को मत पुकारो"

अलक़सस - ८२

और फरमाया :

"अल्लाह ही इस बात का अधिकारी है कि उसको पुकारा जाए और जो लोग अल्लाह के सिवा ग़ैरों को पुकारते हैं वे इन्हें कुछ भी नहीं दे सकते।"

इन आयतों से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो गयी कि नबी करीम सल्ल० ने उनसे इसलिए जंग की ताकि हर प्रकार की दुआ अल्लाह से ही की जाए, नज़र व नियाज़, जिब्ह, फ़रियाद और इस प्रकार की इबादत अल्लाह ही के लिए है उनका केवल इस बात पर इक़रार करना कि अल्लाह ही सब चीजों को पैदा करने वाला और स्वामी है उनके इस्लाम में दाखिल होने के लिए काफी नहीं है उनका यह कहना कि हम फरिश्तों, नबियों और वलियों से केवल सिफारिश चाहते हैं और यह कि वे हमें अल्लाह के निकट कर दें इसी चीज ने उनके जान व माल को मुसलमानों पर हलाल कर दिया यह वह तौहीद है जिसकी ओर नबियों ने दावत दी जिसका हमने खुलासा बयान कर दिया है और इसी तौहीद का मुश्रिकों ने इन्कार किया है।

तो यह वह तौहीद है जो कि "लाइलाहा इल्लल्लाह में मौजूद है इसके बरखिलाफ मुश्रिकों का अल्लाह वह है जो उनके स्वार्थ को पूरा करे। वह सिफारिश से संबन्धित हो या अल्लाह की निकटता से, वह इलाह चाहे फ़रिश्ता हो या नबी या वली या पेड़ या कब्र या कोई जिन्न हो। उनके निकट इलाह से तात्पर्य पैदा करने

वाला या रिज़्क़ देने वाला नहीं बल्कि इस पर तो वह ईमान लाए हैं कि रिज़्क़ व पैदा करने का हक़ तो केवल अल्लाह ही का है वे इलाह के अर्थ से यह तात्पर्य लेते थे जो कि हमारे इस जमाने में मुश्रिक लेते हैं अर्थात अल्लाह के सिवा भी कुछ ऐसे लोग हैं जो अपने अन्दर हर प्रकार की ताक़त व कुदरत रखते हैं।

नबी करीम सल्ल० ने इनको कलिम-ए-तौहीद की दावत दी जो कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" है और इस कलिमा से तात्पर्य केवल शब्द नहीं, बल्कि इसका मतलब भी सामने रहे, जाहिल काफ़िर यह जानते थे कि नबी करीम सल्ल० का मक़्सद इस कलिमा से यह है कि अल्लाह के सिवा किसी और को हाजतें सुनने वाला न माना जाए और सारी चीजें उसके अधिकार में समझी जाएं और अल्लाह के सिवा जिन चीजों की पूजा की जाती है इससे इन्कार नहीं किया जाए और इससे बेज़ारी ज़ाहिर की जाए। इसलिए कि जब नबी करीम सल्ल० ने उनसे कहा कि : "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहो तो उन्होंने कहा -

"अ-ज-अ-लल आलिहतन इलाह ववाहिदन इन्ना हाज़ल - शयउन अजाबुन"

काफ़िर यह कहते हैं कि मुहम्मद सल्ल० कहता है कि माबूद बरहक़ केवल एक ही है बेशक यह एक अजीब बात है जो हमारी समझ में नहीं आती। इससे साफ मालूम होता है कि वह कलिमा के मायने और उसकी टीका नहीं समझता यद्यपि जाहिल काफ़िर इसके अर्थ समझते थे। कितने मुसलमान ऐसे हैं जो कि कलिमा का उच्चारण ही काफी समझते हैं और उनको उसके मतलब व उसके तकाजों से कोई सरोकार नहीं। इनमें सबसे बड़ा अक़्लमन्द केवल इतना अकीदा रखता है कि अल्लाह के सिवा कोई रिज़्क़ देने वाला नहीं, ऐसे आदमी को कलिमा पढ़ लेना उसे फ़ायदा दे सकता है जबकि काफिरों में एक जाहिल आदमी भी "ला इलाहा इल्लल्लाह" का अर्थ जानता है।

जो कुछ हम ब्यान कर चुके हैं यदि आपने इसे पूरी तरह समझ लिया है और यह भी आप जान चुके हैं कि अल्लाह के साथ शरीक ठहराने का क्या मतलब है जिसके लिए अल्लाह ने कुरआन में फरमाया "अल्लाह उस आदमी को कभी माफ न करेगा जिसने उसके साथ शिर्क किया, हां उसके अलावा जिस चीज़ को चाहे वह माफ कर दे।"

(सूरः निसा)

और यह भी मालूम हो गया कि अल्लाह ने शुरू से लेकर अन्त तक सारे नबियों व रसूलों को कौन सा दीन देकर भेजा जिसके अलावा और कोई दीन भी कबूल नहीं होगा और यह चीज़ भी आप पर स्पष्ट हो गयी है कि अधिकांश लोगों ने कलिमा का अर्थ समझने में और दीन के समझने में गलती की है। इस सारी बहस के समझ लेने से दो लाभ हुए। पहला तो यह कि अल्लाह की रहमत और उसके फल की खुशी मिली है जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है:

"ऐ नबी कह दो इनसे कि तुम अल्लाह की रहमत और उसके फल से खुश हो जाओ। दुनिया का माल दौलत जो तुम जमा करते हो उससे अल्लाह का फ़ज़्ल व करम बहुत बेहतर है।"

(सूरः यूनुस : ४५-५१)

दूसरा लाभ यह हुआ कि इन्सान के दिल में अल्लाह का डर पैदा हो गया यह इसलिए कि जब तुमने यह चीज़ अच्छी तरह से समझ ली है कि इन्सान अपनी ज़बान से जो निकालता है उसके आधार पर काफ़िर हो जाता है और कभी कभी वह कुछ कहता है मगर उससे वह जाहिल हो जाता है ऐसी सुरत में उसकी जिहालत कुबूल नहीं और न ही उसे विवश समझा जाएगा और कभी वह इस कलिमा को कहता है उसका ख्याल यह होता है कि यह कलिमा उसे अल्लाह के निकट कर देगा जिस तरह से मुशिरक सोचा करते थे। खास तौर से यदि आप हज़रत मूसा अलैहि० की कौम के किस्से की

ओर ध्यान दें। समझाने बुझाने के बावजूद उन्होंने हज़रत मूसा अलैहि० से मांग की कि वे उनके लिए एक माबूद बना दें जिससे वे दुआ मांगें और अपनी हाजतें पूरी करें। इस किस्से को समझ लेने के बाद हर वह आदमी जिसे अल्लाह ने अकल दी है यह कोशिश करेगा कि वह किसी तरह से इस गुमराही से निजात पा जाए और डर ही इन्सान को इस गुमराही से निजात दिला सकता है। अल्लाह की हिकमत है कि उसने जितने भी नबी व रसूल भेजे और उनको हुक्म दिया कि वे अल्लाह की तौहीद को दुनिया में फैलाएं। उनके साथ साथ उनके दुश्मन भी पैदा किए जैसा कि अल्लाह ने कुरआन में फरमाया "और इसी तरह हमने हर नबी के लिए शैतानों व इन्सानों में से उसके दुश्मन बना दिए वे एक दूसरे को झूठी बातें कह कर धोखा देते थे"। (अल-अनआ़म : ११३)

इसमें कोई शक नहीं कि कभी कभी तौहीद के दुश्मनों के पास ज्ञान विज्ञान भी होता है और उन्होंने उसके मुकाबले के लिए किताबें व दलीलें जमा की होती हैं जैसा कि अल्लाह ने उनके बारे में ख़बर दी है।

"जब उनके पास अर्थात काफ़िरों के पास हमारे रसूल आए और तौहीद की स्पष्ट दलीलें उनके साम़ने उन्होंने पेश की तो काफ़िर अपने इल्म पर बड़े खुश होते थे कि हम उनका मुक़ाबला कर लेंगे क्योंकि हमारे पास भी इल्म हैं।"

(मोमिन - ८३)

जब आप पर यह चीज़ स्पष्ट हो गई कि अल्लाह की राह पर चलने वालों का रास्ता खतरों से भरा है और उनके दुश्मन बहुत ज्यादा हैं जो कि ज़बान की चाशनी व शैली के उतार चढ़ाव और हर प्रकार की दलीलों से लेस हैं तो फिर तुम पर यह वाजिब हो जाता है कि दीन का इल्म हासिल करो ताकि यह इल्म शैतानों के मुक़ाबले के लिए मजबूत हथियारों का काम दे जो कि अल्लाह के दीन को मिटाना चाहते हैं और लोगों में फ़ित्ना पैदा करने के

इच्छुक हैं। तुम्हें मालूम है कि उनके इमाम और पेशवा से अल्लाह ने क्या कहा चुनांचे अल्लाह इसी बारे में फ़रमाता है:

"शैतान ने कहा कि मैं उनके लिए तेरे सीधे रास्ते पर बैठुंगा और उनहें गुमराह करूंगा में उनके आगे से आऊंगा और उनके पीछे से आऊंगा उनके दायीं ओर से आऊंगा।"

(अल-आराफ : १६-१७)

ताकि इसी तरह से उन्हें सही रास्ते से मोड़कर गलत रास्ते पर डाल सकें हां यदि आपने अल्लाह की ओर ध्यान किया और उसकी दलीलों व आयतों की ओर कान लगाए तो फिर किसी प्रकार का भय नहीं है कि शैतान तुम्हें गुमराह कर देगा या गलत रास्ते पर डाल देगा क्योंकि अल्लाह ने कुरआन में फरमाया है :

"शैतान का मकर व फरेब बड़ा कमज़ोर है।"

(निसा : ७३)

एक तौहीद परस्त व दीन का इल्म मानने वाला उसके फन्दे में नहीं फंस सकता इसमें कोई शक नहीं कि तौहीद परस्तों में एक आम आदमी मुश्रिकों के एक हजार विद्वानों पर ग़ालिब आ सकता है जैसा कि अल्लाह ने कुरआन में इर्शाद फ़रमाया है :

"बेशक हमारा लश्कर ही ग़ालिब आने वाला है।"

(अल-माइदा : ५६)

अल्लाह पर ईमान लाने वाले और तौहीद पर क़ायम रहने वाले ही अल्लाह के लश्कर में से हैं वे लोगों पर अपनी ज़बान और दलीलों से ग़ालिब आते हैं जैसा कि वे तलवार और नेज़े से दुश्मनों पर ग़ालिब आते हैं।

हां यदि कोई ख़तरा है तो वह उस तौहीद परस्त के लिए है जो कि इस राह पर चलता तो है मगर उसके पास कोई हथियार नहीं अल्लाह का हम पर बड़ा अहसान है कि उसने हम पर एक ऐसी किताब उतारी कि उसमें हर चीज़ का स्पष्ट बयान है, व लोगों के लिए रहमत व हिदायत का जरिया है और ईमान लाने वालों के

लिए उसमें बहुत बड़ी खुश खबरी है। असत्यवादी कोई दलील नहीं लाता है मगर कुरआन में इसका जवाब मौजूद है इसके झूठ को तोड़ने के लिए दलीलें मौजूद हैं जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

"ए नबी ये तेरे पास कोई मिसाल या दलील नहीं लाते हैं मगर हम इसकी हक़ीक़त आप पर ज़ाहिर कर देते हैं।

(अल-फ़ुरक़ान : ३३)

कुछ टीकाकारों ने कहा है कि यह आयत दलील है इस बात की कि मुशिरक जो आपत्ति भी करेंगे उनका जवाब कुरआन में मौजूद है।

अब हम आपके सामने कुछ वे चीजें बयान करते हैं जो अल्लाह ने हमारे ज़माने के मुशिरकों के जवाब में बयान की है। असत्य के पुजारियों का जवाब दो तरीक़ों से हो सकता है। एक मुजमल (सार का तरीका) है और दूसरा मुफ़स्सल (खोलकर बयान करने का) मुजमल तरीक़ा एक अहम चीज़ है और इसमें अक़लमन्द के लिए जो कि इसे समझ ले बहुत बड़ा फायदा है और यह अल्लाह के इस फ़रमान में है :

वही अल्लाह है जिसने तुझको किताब दी है जिसमें कुछ आयतें मोहकम व मज़बूत हैं और वही असल किताब है जिनका मतलब पूरी तरह स्पष्ट है और कुछ ऐसी हैं जो मुताशाबिहात में से हैं अर्थात उनका मतलब हर एक पर जाहिर नहीं होता मगर जिन लोगों के दिलों में टेढ़ेपन है वे मोहकमात व स्पष्ट आयतों को छोड़कर मुताशाबिहात के पीछे पड़ते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि इस तरह से लोगों में फ़ित्ना पैदा किया जा सकता है।

(आले इमरान : ७)

इसलिए कि इन आयतों का मतलब आम लोग तो जानते नहीं और इनको मौका मिल जाता है कि लोगों को सीधे रास्ते से हटाकर ग़लत रास्ते की ओर लगा दे इसीलिए हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया :

"व इज़ा रअयतुमुल्लज़ीना यत्तबेऊना फउलाइकल्लज़ीना सम्मल्लाहु फअहजरूहुम"

"अर्थात जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो कि मुताशाबिहा आयतों के पीछे लगे हुए हैं तो समझ लो कि यह वही लोग हैं जिनका बयान अल्लाह ने कुरआन में किया है कि इनके दिल टेड़े हैं और तुम्हें इनसे बचना चाहिए''।

इनकी मिसाल यह समझ लेना चाहिए कि यदि आपको कुछ मुश्रिकों में से यह कहें कि अल्लाह कुरआन में फरमाता है कि औलिया उल्लाह पर किसी प्राकर का भय व दुख न होगा या कहें कि सिफारिश का हक़ है और नबियों का अल्लाह के नज़दीक एक मरतबा है या इसके अलावा कोई ऐसी बात कहें जिससे अपने मक़सद के लिए कोई दलील हासिल करें कि अल्लाह के वली या नबी हमारी दुआओं को सुनते हैं वे चूंकि अल्लाह के खास हैं इसलिए उनका वास्ता उचित है आपको चाहिए कि उन्हें यह जवाब दें कि अल्लाह ने फरमाया है कि जिनके दिलों में कुफ्र व शिर्क की बीमारी है वे मोहकम आयतों को छोड़कर मुताशाबह आयतों की पैरवी करते हैं और तुम्हें यह भी मालूम हो चुका है कि अल्लाह ने फरमाया है कि मुश्रिक अल्लाह की सत्ता के कायल है उनका कुफ्र केवल इस बात में जाहिर होता है कि उन्होंने फरिश्तों, नबियों और वलियों को अपना सिफारिशी बनाया है जैसा कि अल्लाह ने उनका कथन नकल किया है :

"हा उलाई शुफा आउना इन्दललाहि (यूनुस)"

वे यह कहते हैं कि हम उनकी इबादत तो नहीं करते बल्कि वे तो अल्लाह के पास हमारी सिफारिश करने वाले हैं यह चीज़ पक्की है और उनका अक़ीदा स्पष्ट है इस स्पष्ट और साफ बयान को कोई बदल नहीं सकता।

जब अल्लाह ने इस बात का इन्कार कर दिया है तो फिर तुम्हारा इस प्रकार की आयतें पेश करके कि वलियों पर कोई दुख व

भय नहीं क्या मक़सद है सिवाय इसके कि लोगों को धोखा दो। हम कहते हैं कि यह बिल्कुल ठीक है कि उन पर किसी प्रकार का भय व दुख नहीं होगा मगर यह कहां से साबित हो गया कि उनका वास्ता भी सही है यदि ऐसा है तो फिर अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० का विरोध करने वालों को काफ़िर व मुशिरक क्यों कहा है वे भी तो सही कहते थे कि हम मांगते तो अल्लाह ही से हैं मगर इनका तो हम वसीला बनाते हैं क्योंकि ये अल्लाह के खास हैं अल्लाह ने तो इसका इन्कार कर दिया है या नबी करीम सल्ल० का कथन पेश किया है मैं इसका मतलब और अर्थ नहीं जानता मगर मैं यकीन से कह सकता हूँ कि अल्लाह कभी कुछ कहें और कभी कुछ कहें इसी तरह से मुझे इस बात पर भी यकीन है कि नबी सल्ल० का कलाम अल्लाह के कलाम का विरोध नहीं कर सकता है यह जवाब बड़ा साफ़ व सीधा सा जवाब है मगर इसे वही समझ सकता है जिसे अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी हो। यह जवाब देते समय किसी प्रकार की लज्जा महसूस नहीं करनी चाहिए और न ही भड़कना चाहिए जैसा कि अल्लाह ने फरमाया है :

"वमा युलक़्क़ाहा इल्लल्लजीना स-ब-रू वमा युलक़्क़ाहा हज़्ज़िन अज़ीम० (हामीम सजदा : ३५)

अर्थात -- "इन नसीहत को वही कबूल करता है जिसमें सब्र का तत्व हो और उसे अल्लाह ने दुनिया व आखिरत में बहुत बड़ा हिस्सा दिया है। जवाब खुलासा करके इस तरह कि अल्लाह के दुश्मनों को बहुत ज्यादा आपत्तियां हैं जिससे वे लोगों को सीधे रास्ते से रोकते हैं उनमें से एक यह है कि वे कहते हैं कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते बल्कि हम इस बात का इकरार करते हैं कि अल्लाह ही ख़ालिक़ व राज़िक़ है वही नफ़ा देता है और वही नुक़सान पहुंचा सकता है वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं। मैं इस बात का इकरार भी करता हूँ कि मुहम्मद सल्ल० अपने नफ़े व नुक़सान के मालिक नहीं इनके अलावा कोई भी हो

चाहे वह शेख़ अब्दुलकादिर जीलानी रह० ही क्यों न हो, कोई भी अपने नफ़े व नुक़सान का मालिक नहीं यह सब कुछ अल्लाह के हाथ में है लेकिन मैं गुनहगार हूँ और नेक बुज़ुर्ग अल्लाह के नज़दीक ऊंचा मरतबा रखते इसलिए मैं उनके वास्ते से अल्लाह से मांगता हूँ। इन लोगों को भी वही जवाब देना चाहिए जो पहले गुज़र चुका है वह यह कि नबी सल्ल० ने जिन लोगों से जंग की उनका भी अक़ीदा वही था जो तुम्हारा है क्योंकि वे कहते थे कि उनके बुत अपने तौर पर कोई ताक़त नहीं रखते वे तो केवल उसको वास्ता और वसीला बनाते हैं ताकि उनकी दुआ अल्लाह तक पहुंच जाए। इसके बावजूद अल्लाह ने काफ़िर और मुश्रिक कहा और यह भी कहा कि जिनको यह वसीला बनाते हैं ये उनकी बात भी नहीं सुनते और न ही इन्हें कोई जवाब दे सकते हैं।

यदि वे यह जवाब दें कि इस तरह की सारी आयतें बुतों के बारे में आयी हैं जो उनकी पूजा करते हैं मगर नेक और बुज़ुर्गों को तुम बुतों के साथ कैसे मिलाते हो तो उनका जवाब यह है कि जब तुम यह इक़रार करते हो कि काफ़िर सारे के सारे अल्लाह की सत्ता को मानंते हैं और यह कहते हैं कि वास्तविक स्वामी वही है और वे यह भी कहते हैं कि हम तो केवल अपने माबूदों से सिफ़ारिश के इच्छुक हैं तो फिर अजीब बात यह है कि वे अपने काम और काफ़िरों के कामों में फ़र्क़ करते हैं। यद्यपि बात एक ही है। उन्हें यह जवाब देना चाहिए कि काफ़िरों में से कुछ तो नेक लोगों को पुकारते थे और कुछ बुतों को पुकारते थे और इनमें से ऐसे भी थे जो कि वलियों को पुकारते थे जिनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है :

"वे लोग हैं कि जिनको काफ़िर पुकारते हैं यद्यपि वे स्वयं इस बात के इच्छुक हैं कि कौन सा वह अमल करें जो कि उन्हें अल्लाह के निकट कर दे जिनकी अपनी यह हालत हो वे दूसरों को लाभ पहुंचा सकते हैं वे ईसा इब्ने मरयम को भी पुकारते थे उनकी

मुरादें पूरी करें।"

इसलिए अल्लाह ने फ़रमाया "ईसा इब्ने मरयम अल्लाह के पैग़म्बर थे उन के पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके थे और उनकी वाल्दा (मरयम) ख़ुदा की वली ओर सच्ची फ़रमाबरदार थी। दोनों इन्सान थे और साथ बैठकर खाना खाते थे। देखो हम उन लोगों के लिये अपने आयतें किस तरह खोल खोल कर बयान करते हैं। फिर (ये) देखो किधर उल्टे जा रहे हैं''।

(अलमाइदा - ७५)

इसके बाद अल्लाह के इस कथन की ओर ध्यान दो -- "हम फरिश्तों से कहेंगे क्या यही लोग तुम्हारी इबादत करते थे वे कहेंगे कि ऐ अल्लाह तू पाक है और तू ही हमारा वली है हमारा उनके साथ कोई ताल्लुक़ नहीं। ये तो जिन्नों की इबादत करते थे और ज्यादातर इनमें के उन्हीं पर ईमान लाए थे''।

(सूर: सबा ४०-४२)

दूसरी जगह अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया :

"अल्लाह हज़रत ईसा इब्ने मरयम से पूछेगा कि क्या तूने लोगों से कहा था कि वे अल्लाह को छोड़कर तेरी और तेरी माँ की इबादत करें हज़रत ईसा जवाब देंगे ऐ अल्लाह मैं वह बात कैसे कह सकता हूँ कि जिसका मुझे कोई हक़ नहीं।"

-- अल-माइदा

अर्थात मैं तेरा बन्दा होकर किस तरह लोगों को अपनी इबादत की दावत दे सकता था, मैंने तो तेरी ही इबादत की ओर लोगों को बुलाया है। इन आयतों से स्पष्ट हो गया कि अल्लाह ने बुतों को पुकारने वालों को भी काफ़िर कहा है और फ़रिश्तों व नबियों को पुकारने वालों को भी काफ़िर कहा है और नबी करीम सल्ल० ने इनसे जंग की है।

यदि वे न यह कहें कि काफ़िर तो उनसे मदद के इच्छुक थे और उनसे मांगते थे मगर इसके बरख़िलाफ़ मेरा अकीदा तो यह

है कि अल्लाह ही नफे नुक़सान का मालिक है वही तदबीर करने वाला है मैं उसके सिवा और किसी से नहीं मांगता हूँ और बुजुर्ग और नेक लोगों के हाथ में कोई अधिकार नहीं। मैं तो केवल उनसे सिफारिश का इच्छुक हूँ।

इसका जवाब यह है कि काफ़िरों का अक़ीदा भी ठीक ठीक यही है चुनांचे अल्लाह उनके बारे में फरमाता है :

"वे लोग जो अल्लाह के सिवा भी किसी को अपना कारसाज़ बनाते हैं वे कहते हैं कि हम उनकी पूजा नहीं करते हैं बल्कि हम तो उनसे मुहब्बत इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह के निकट कर दे।"

(सूरः जुमर)

दूसरी आयत ४ में अल्लाह ने इर्शाद फरमाया :

"हाउलाई शुफाआउना इन्दल्लाहि" (यूनुस : १४)

"ये तो अल्लाह के पास हमारी सिफारिश करेंगे।"

बस ये तीन सबसे बड़े सन्देह जो उनके पास है और यही सबसे बड़ी दलील उनके पास है और इस आयत से स्पष्ट हो गया कि यह सब कुछ उनकी लड़ाई है। इन सन्देहों को समझ लेने के बाद बाकी सब कुछ आसान है।

यदि कोई आदमी यह कहे कि मैं तो अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत नहीं करता। वलियों से दुआ मांगना कोई इबादत नहीं है इसका जवाब यह है कि आप इनसे कहें कि तुम इस बात का इक़रार करते हो कि अल्लाह की नेक नीयती के साथ इबादत करना तुम पर वाजिब है तो हमें बतलाओ कि नेक नीयती के साथ इबादत करने का एक अर्थ है ? निश्चय ही उनके पास इसका कोई जवाब नहीं।

अल्लाह की आयतें इन्हें पढ़कर सुनाओ जिनमें अल्लाह ने इबादत और उस की किस्मों का जिक्र किया है। जैसा कि अल्लाह ने फरमाया :

इसके बाद आप उससे पूछें कि यदि आप अल्लाह के इस कथन पर अमल करें जैसा कि उसने अपनी किताब में फरमाया है :

"फसाल्लि लिरब्बिका वन्हर" (सूर: कौसर)

"तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और उसके लिए कुरबानी कर।"

जब तुमने उसके नाम पर जिब्ह किया और उसका आज्ञापालन किया तो क्या यह इबादत नहीं ? निश्चय ही वह कहेगा कि यह इबादत है तो फिर तुम उससे कहो कि यदि तुमने किसी के नाम पर ज़िब्ह किया और किसी नबी और जिन्न आदि के लिए ज़िब्ह किया तो क्या तुमने अल्लाह के साथ उसकी इबादत में किसी ग़ैर को शरीक किया या नहीं ? निश्चय ही वह इक़रार करेगा कि उसने अल्लाह के साथ उसकी इबादत में किसी और को उसका शरीक बनाया है।

फिर उससे कहो कि मुश्रिक जिनके बारे में कुरआन नाज़िल हुआ है क्या वे फरिश्तों वलियों और लात आदि की इबादत करते थे या नहीं? वह निश्चय ही कहेगा कि करते थे, इस इक़रार के बाद उससे पूछो कि क्या उनकी इबादत वलियों या लात आदि के लिए भी नहीं थी कि वे उनसे दुआऐं मांगते थे और उन्हीं के सामने अपनी मिन्नतें रखते थे और उन्हीं के लिए ज़िब्ह करते थे इसके अलावा वे इस बात का इक़रार करते थे कि वे अल्लाह ही के बन्दे हैं और उसी के ग़लबे और प्रकोप में हैं और अल्लाह ही सारे कामों की तदबीरें करता है ग़ैरों के लिए वे केवल सिफ़ारिश के इन्कारी नहीं हैं ओर न ही उससे बरी है बल्कि हमारा ईमान है कि नबी सल्ल० सिफ़ारिश करेंगे और आपकी सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी और हम इस सिफ़ारिश के उम्मीदवार हैं मगर इसके बावजूद हम यह कहेंगे कि सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के लिए है जैसा कि अल्लाह ने कुरआन में इर्शाद फरमाया है :

"قُلْ لِلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا

(अल-जुमर : ४४)

ऐ नबी इनसे कह दो कि सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के लिए है और अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकेगा जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है :

"مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ"

(बकरा : ५५)

अर्थात किसी आदमी को हक़ हासिल नहीं कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना सिफ़ारिश कर सके। कोई आदमी भी किसी के लिए सिफ़ारिश नहीं करेगा जब तक कि अल्लाह का हुक्म न हो कि तुम इसके लिए सिफ़ारिश कर लो जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

"وَمَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُ"

(आले इमरान : ८५)

जो आदमी इस्लाम के अलावा किसी और दीन को चाहे उसका कोई अमल कबूल नहीं।

जब यह बात स्पष्ट हो गयी कि सिफ़ारिश सब की सब अल्लाह के लिए है और कोई आदमी उसकी इजाज़त के बिना नहीं कर सकेगा न ही नबी सल्ल० और न ही आपके अलावा कोई किसी की सिफ़ारिश कर सकेगा जब तक कि अल्लाह इजाज़त न दे और यह मालूम है कि अल्लाह तौहीद परस्तों के अलावा किसी को सिफ़ारिश की इजाज़त नहीं देगा जब यह स्पष्ट हो गया तो फिर हमें अल्लाह से ही हर चीज़ मांगनी चाहिए और यह कहना चाहिए कि ऐ अल्लाह मुझे नबी सल्ल० की सिफ़ारिश से महरूम न करना, ऐ अल्लाह मेरे बारे में आपकी सिफ़ारिश कुबूल फरमा। इस तरह की दुआ मुसलमानों को फ़ायदा दे सकती है।

हां यदि आदमी यह कहे कि अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को सिफ़ारिश की इजाज़त दी है और मैं आपसे वही मांग रहा हूँ जो कि अल्लाह ने उसे दिया है तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को सिफ़ारिश का हक़ दिया है मगर तुम्हें उनसे सवाल करने

से मना कर दिया है जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

"فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللّٰهِ أَحَداً"

(सूरः जिन्न - १८)

"अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारो।"

इसके अलावा सिफ़ारिश नबी करीम सल्ल० के अलावा दूसरों को भी अल्लाह ने प्रदान की है जैसे की नबी सल्ल० से रिवायत है कि फ़रिश्ते और वली छोटे बच्चों की सिफ़ारिश करेंगे, क्या तुम यह कहोगे कि अल्लाह ने उन्हें शिफ़ाअत प्रदान की है और मैं उनसे मांगता हूँ। यदि तुमने यह कहा तो फिर तुमने गैरों की इबादत की जिसका जिक्र अल्लाह ने अपनी किताब में किया है कि मेरे सिवा किसी और को मत पुकारो और यदि तुम कहो कि नहीं तो फिर तुम्हारा पहला कथन असत्य हो जाता है जिसका तुमने इकरार किया था कि अल्लाह ने उनको सिफ़ारिश प्रदान की है और मैं इसमें से तलब करता हूँ।

यदि कोई आदमी यह कहे कि मैं बिल्कुल अल्लाह के साथ किसी प्रकार का शिर्क नहीं करता हूँ हां अलबत्ता नेक लोगों से विनती करना कोई शिर्क नहीं है तुम उससे यह कहो कि जब तुम इस बात का इक़रार करते हो कि मुश्रिक की निजात नहीं होगी तो फिर बताओ कि वह कौन सी चीज़ है जिसको अल्लाह ने हराम किया है और बताया है कि वह इसे माफ़ नहीं करेगा और तू इसे नहीं जानता तुम अपने आपको शिर्क से बरी कैसे करते हो जबकि तुम इसको नहीं जानते या फिर अल्लाह ने तुम पर यह कैसे हराम कर दिया है और फ़रमाया कि वह मुश्रिक को कभी माफ़ नहीं करेगा। तुम उसके बारे में न किसी से सवाल करते हो और न ही उसे पहचानते हो या तुम्हारी सोच यह है कि अल्लाह ने उसे हराम किया है मगर हमें उसके बारे में बताया नहीं।

तो यदि वह यह कहे कि शिर्क तो बुतों की पूजा करने का नाम है और हम तो बुतों की पूजा नहीं करते उनसे पूछो कि

इबादत का क्या मतलब है ? क्या तुम्हारी यह राय है कि मुश्रिक इन पेड़ों और पत्थरों में यह ताक़त तसलीम करते थे कि वे पैदा करते हैं या रिज़्क़ देते हैं या और किसी प्रकार की इनमें ताक़त है जो इस चीज़ को कुरआन नकारता है कि मुश्रिक इस बात को मानते ही न थे जैसा कि अल्लाह ने फरमाया :

"قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ"

(यूनुस - ३१)

ऐ नबी इनसे पूछो कि तुम्हें ज़मीन व आसमान में से रिज़्क़ कौन पहुंचाता है उनके पास इसके सिवा और कोई जवाब नहीं कि सब कुछ अल्लाह की ओर से है।

और यदि वह यह कहे कि ये लोग जो कि पेड़ों, पत्थरों और कब्र आदि का इरादा करते हैं या इसके अलावा किसी को पुकारते हैं और उनकी निकटता के लिए ज़िब्ह करते हैं। ये सब कुछ इसलिए है कि वे यह विश्वास रखते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के करीब कर देंगे और इनसे मुसीबत इनकी वजह से अल्लाह दूर कर देगा। आप उससे यह कहें कि तुमने बिल्कुल ठीक कहा है। इसी तरह से तुम भी पत्थरों और कब्रों पर भी कुछ करते हो।

इसमें कोई शक नहीं कि उसने अपने काम को तसलीम कर लिया है कि यही बुतों की इबादत है। अब इसके बाद उनसे यह भी कहे कि तुम्हारा यह ख्याल है कि शिर्क इसके साथ ही खास है, नेक लोगों व बुजुर्गों पर विश्वास करना और उनसे दुआऐं मांगना इस शिर्क में दाखिल नहीं तो इसके खण्डन में अल्लाह का कथन काफी है जो उसने क़ाफ़िरों के बारे में कहा है कि वह फरिश्तो, हज़रत ईसा और नेक लोगों की पूजा करते थे और उनकी पूजा यही थी कि वे निकटता हासिल करते थे और उनको वसीला बनाते थे कि उनके माध्यम से अल्लाह उनकी दुआ कुबूल कर लेगा।

इसमें कोई शक नहीं कि वह बिना किसी संदेह के आप से सहमत होगा कि जिसने अल्लाह की इबादत में किसी बुजुर्ग या नबी

या वली को शरीक किया तो वह उसी शिर्क का शिकार है जो कि कुरआन में बयान किया गया है और यही दरकार है कि वह इस बात का इक़रार करे। इस मसले पर राज़ यह है कि जब कोई आपसे यह कहे कि मैं तो अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता हूँ तो उससे पूछो कि शिर्क क्या चीज़ है व्याख्या करो। यदि वह यह कहे कि इससे तात्पर्य बुतों की पूजा करना है तो उससे पूछो कि बुतों की पूजा करने से तुम्हारी क्या मुराद है इसकी व्याख्या करो।

यदि वह यह कहे कि मैं अल्लाह की इबादत के सिवा किसी और की इबादत नहीं करता हूँ तो उससे सवाल करो कि अल्लाह की इबादत करने का क्या अर्थ है हमें इसकी टीका बताओ यदि वह इसकी टीका वह बताए जो कुरआन ने बतायी है तो समझ लो कि यही दरकार है और यदि उसे मालूम ही नहीं कि अल्लाह की इबादत से क्या तात्पर्य है तो इसके लिए कैसे जायज़ हुआ कि एक चीज़ का दावा करे जिसके बारे में उसे कुछ भी ज्ञान नहीं। और यदि वह इन आयतों की टीका गलत करे जो कि तुमने उसे सामने पेश की है जिसमें अल्लाह ने शिर्क का मतलब बयान किया है और बुतों की इबादत की भी व्याख्या की है जो कुछ लोग इस ज़माने में करते हैं तो फिर भी तो वह चीज़ है जिस पर ये बेचारे इन्कार करते हैं और बड़े ज़ोर से चिल्लाते हैं जैसे कि उनके भाई चिल्लाते थे जब उनसे यह कहा जाता था कि अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक न करो जैसा कि अल्लाह ने फरमाया :

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ (ص:٥)

"क्या यह नबी केवल एक अल्लाह की इबादत के लिए ही कहता है यह बड़ी अजीब सी चीज़ है।"

जब आपको यह मालूम हो गया है कि इस शिर्क को ही हमारे ज़माने के मुशिरक अकीदा कहते हैं वे आपसे हर बात पर झगड़ते हैं कि ये बुजुर्गों को नहीं मानते और औलिया का अपमान करते हैं आदि आदि। मगर उन्हें मालूम नहीं है कि यही वह शिर्क

है जिसके लिए कुरआन नाज़िल हुआ और इसी कलिमा पर हुज़ूर सल्ल० ने लोगों से जंग की। मालूम होना चाहिए कि पहले ज़माने के लोगों का शिर्क हमारे इस ज़माने के लोगों से कम था एक तो इसलिए कि पहले लोग अल्लाह के साथ जो शरीक करते थे और फरिश्तों, नबियों और वलियों को पुकारते थे वे केवल आसानी व सुख के समय में पुकारते थे मगर जब उन पर कोई बहुत बड़ी मुसीबत आ जाती थी तो फिर सब छोटे छोटे सहारों और वसीलों को छोड़कर केवल खालिस अल्लाह को पुकारते थे जैसा कि अल्लाह ने उनकी इस आदत को कुरआन में बयान किया है।

"जब तुम्हें समुद्र में कोई तकलीफ पहुंचती है तो सारे सहारे छोड़कर केवल उसी को ही पुकारते हो। और जब तुम्हें सलामती के साथ खुश्की पर ले आता है तो फिर तुम उससे बचने लगते हो और इन्सान हमेशा अल्लाह की नाशुक्री करता है कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है :

"ऐ नबी इनसे पूछो कि मुझे बताओ यदि तुम्हारे पास अल्लाह के अज़ाब आ जाए या फिर तुम पर क़यामत टूट पड़े तो क्या तुम अल्लाह के सिवा गैरों को पुकारोगे ? यदि सच्चे हो तो इसका जवाब दो, नहीं बल्कि तुम अल्लाह ही को पुकारोगे और वह तुम्हारी दुआ सुनेगा और जिस मुसिबत का तुम शिकार हो उससे तुम्हें निजात देगा। यदि वह चाहेगा ऐसे अवसर पर तुम उन सब चीजों को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो।

(अल-अनआम - ४०)

इसी तरह अल्लाह ने दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

"जब इन्सान को कोई मुसीबत आती है तो वह खालिस अपने रब को पुकारता है और उसी की ओर झुकता है।"

(सूरः जुमर - ८)

"وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ"

"जब वे समुद्रों में सफ़र करते हैं और उसकी लहरें उनके

ऊपर बादलों की तरह छा जाती हैं तो फिर खालिस अल्लाह ही को पुकारते हैं और उसी की ओर झुकते हैं हां, जो आदमी इस मसले को समझ ले जो कुरआन ने मुकम्मल तौर पर बयान किया है कि मुश्रिक जिनसे नबी सल्ल० ने जंग की जो अल्लाह को भी पुकारते थे और अल्लाह के अलावा राहत व आराम में गैरों को भी पुकारते थे मगर मुसीबत और सख्त परेशानी के मौक़े पर वे अल्लाह के सिवा किसी और को नहीं पुकारते थे, उस समय वे अपने पीरों व माबूदों को भूल जाते थे उस आदमी पर यह चीज़ स्पष्ट हो जाती है और वह पूरी तरह से इस फ़र्क़ को मालूम कर लेता है जो कि हमारे ज़माने के मुश्रिकों में था मगर कितने दुख की बात है कि वे रोशन दिल कहां हैं जो इस मसले को पूरी तरह समझ सकें। अल्लाह ही कार साज़ है।"

दूसरा फ़र्क़ यह है कि पहले लोग अल्लाह के साथ खास ही लोगों को पुकारते थे जो अल्लाह के निकट एवं खास महत्व रखते हैं वे नबीयों में से हों या वलियों में से या फरिश्तों में से इसके अलावा वे पेड़ों व पत्थरों की भी पूजा करते थे जो अल्लाह के आज्ञापालक हैं और किसी की अवज्ञा नहीं करते। मगर दुख इस बात का है कि हमारे ज़माने के लोग अल्लाह के साथ साथ लोगों को भी पुकारते हैं जो लोगों में सबसे बड़े अवज्ञाकारी और दुष्ट हैं। जो लोग इनके बुज़ुर्ग होने के क़ायल हैं वे स्वयं ही उनकी बुराईयों व कार्यों के क़िस्से बयान करते हैं, वे जिना करते हैं चोरियां करते हैं और नमाज़ की उन्हें कोई परवाह नहीं, कभी भुल कर भी मस्जिद में दाखिल नहीं होते। जाहिर है जो लोग ऐसी चीजों की पूजा करते हैं जो अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते बल्कि हर समय अल्लाह की इबादत में लगे रहते हैं जैसे पेड़, पत्थर आदि। ये उन लोगों से बेहतर हैं जो ऐसे आदमीयों की पूजा करते हैं जो बुराईयों व गलत कार्यों का शिकार हैं और उनका बिगाड़ ज़ाहिर है और वे स्वंय भी इस बात की गवाही देते हैं

जब यह बात साबित हो गयी कि जिन लोगों से नबी करीम सल्ल० ने जंग की उनसे ज्यादा अक्लमन्द और उनसे कहीं कम शिर्क का शिकार थे उन लोगों को एक बड़ा संदेह है जो इस अक़ीदे पर वार करते हैं जो हमने बयान किया है, यह उनका सबसे बड़ा संदेह है इसलिए इसका जवाब देना बड़ा जरूरी है और वह यह है कि ये लोग कहते हैं कि जिन लोगों पर कुरआन नाज़िल हुआ था अर्थात मुश्रिक वे "लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह नहीं कहते थे और कलिमए शहादत को भी नहीं मानते थे वे नबी सल्ल० को झुठलाते थे वे दोबारा जीवित हो जाने के इन्कारी थे और वे कुरआन को भी झुठलाते थे और कहते थे कि यह जादू है और हम:

"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

की गवाही देते हैं और कुरआन की तसदीक़ करते हैं और हमारा कियामत पर ईमान है और हम नमाज़ पढ़ते हैं और रोज़ा रखते हैं फिर हमें तुम उनकी तरह क्यों कहते हो और उनसे मिसाल क्यों देते हो ?

इसका जवाब यह है कि समस्त उलामा इस बात पर सहमत हैं कि यदि कोई आदमी नबी सल्ल० की कुछ बातों की तो तसदीक़ करे और कुछ को झुठलाए तो वह काफ़िर है और उसका इस्लाम से कोई ताल्लुक नहीं और इसी तरह से जब कोई आदमी कुरआन के एक हिस्से पर तो ईमान लाये और दूसरे हिस्से का इन्कार करे वह भी इस्लाम से बाहर है जैसे कोई आदमी तौहीद का इक़रार भी करता है नमाज़ के फ़र्ज़ होने को भी मानता है लेकिन ज़कात का इन्कार करता है या वह इन सारी चीज़ों पर तो ईमान लाता है लेकिन रोजे का इन्कार करता है या हक़ का इन्कार करता है तो बिना किसी विवाद के ऐसा आदमी इस्लाम की सीमा से बाहर हो जाता है।

अल्लाह ने कुरआन में हज न करने वालों के बारे में किसी सज़ा का हुक्म उस समय फ़रमाया जब लोगों में कोई आदमी

भी इससे इन्कार करता था।

"وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلاً وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ"

(आले इमरान - ९७)

"लोगों पर हज फ़र्ज़ है जो इसके लिए रास्ते की ताकत व हैसियत रखता है और जो इससे इनकार करे तो अल्लाह दुनिया वालों से बे नियाज़ है।"

इसी तरह जो कोई उन तमाम चीज़ों पर ईमान लाए मगर दोबारा जीवित होने का इन्कार करे वह सबके निकट काफ़िर है उसका खून व माल हलाल है जैसाकि अल्लाह ने कुरआन में फरमाया है :

"बेशक वे लोग जो अल्लाह व उसके रसूल से कुफ्र करते हैं वे चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूल के बीच फ़र्क डाल दे और वे कहते हैं कि हम कुछ चीजों पर ईमान लाते हैं और कुछ का इन्कार करते हैं और वे चाहते हैं कि एक बीच का रास्ता अपनाऐं। यही वे लोग हैं जिनके कुफ्र में कोई शक नहीं। हमने कुफ्र करने वालों के लिए रूसवा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।"

(सूरः निसा : १५०-१५१)

जब अल्लाह ने साफ़ साफ़ बयान फ़रमा दिया कि जो किताब के एक हिस्से पर ईमान लाए और उसके दूसरे हिस्से का इन्कार करे उसके कुफ्र में कोई शक नहीं यह संदेह आपसे आप खत्म हो जाता है जिसका ये बेचारे शिकार हैं।

इस तरह के संदेह जो पहले ही बयान कर दिये गये हैं, पेश करने वाले से यह भी कहा जाए कि जब इस बात का तुम इक़रार करते हो कि जिसने नबी सल्ल० की हर बात की तसदीक़ की केवल नमाज़ के फ़र्ज़ होने का इन्कार किया तो काफ़िर है। उसका खून व माल हलाल है। इसी तरह से यदि वह हर चीज़ पर

ईमान लाता है मगर दोबारा जीवित होने को नहीं मानता और इसी तरह वह रोजों का इन्कार करते हैं तो इसमें किसी भी संदेह या झूठ का मतभेद नहीं कि ऐसा आदमी इस्लामी बिरादरी से खारिज है कुरआन मजीद ने ऐसे आदमी के बारे में गवाही पेश की है जैसा कि पहले गुज़र चुका है और तुम्हें मालूम है कि तौहीद एक महत्वपूर्ण फरीज़ा है जिसे नबी सल्ल० लेकर आए। वह हज नमाज़ रोज़ा और सारी इबादतों से अहम हैं तो फिर यह कैसे कल्पना की जा सकती है कि इबादत के इन्कार से तो वह काफ़िर हो जाए मगर तौहीद के इन्कार से उसमें कोई फ़र्क़ न आये जो सारे नबियों की दावत है, सुबहानल्लाह यह कितनी बड़ी जिहालत है।

इन्हें यह भी कहा जाए कि नबी सल्ल० के सहाबा ने बनु हनीफ़ा से जंग की जबकि वे नबी सल्ल० के साथ ईमान लाए थे वे कलिमा ए शहादत पढ़ते थे, नमाज़ पढ़ते थे ज़कात अदा करते थे और मस्जिदों में अजानें भी देते थे यदि आपका विरोध इसका जवाब यों दे कि उन्होंने मसैलमा कज्ज़ाब को नबी तसलीम कर लिया था हम कहेंगे कि यही मतलब है जब कोई आदमी किसी को नबी सल्ल० के मरतबे तक पहुँचा दे तो वह काफ़िर हो जाता है और उसका जान व माल मुसलमानों पर हलाल हो जाता है और उसे शहादतें, रोजे और नमाजें कोई भी फ़ायदा नहीं देती तो क्या ख्याल है उस आदमी के बारे में जो कि सूरज, चांद या किसी पैग़म्बर, सहाबी या वली को जमीन व आसमान को बनाने वाले के मुक़ाबले में ले आए--सुबहानल्लाह ! अल्लाह बड़ा बुलन्द व बरतर है और पाक है अल्लाह इन जाहिलों के दिलों पर इस तरह मुहरें लगा देता है कि ये हक बात समझ ही नहीं सकते।

इन लोगों के सामने हज़रत अली रज़ि० का क़िस्सा बयान करो जबकि उन्होंने उन लोगों को आग में जला दिया था जो हज़रत अली रज़ि० की मुहब्बत में इतना आगे बढ़ गये थे कि कहा करते थे कि इनमें खुदाई गुण पैदा हो गये हैं जबकि वे इस्लाम के दावेदार

भी थे और हज़रत अली रजि० के साथियों में से भी थे और उन्होंने सहाबा से इल्म हासिल किया था मगर उन्होंने हज़रत अली रजि० के बारे में यह अकीदा बना लिया था जो कि आजकल के लोग वलियों के बारे में अकीदा रखते हैं या जैसा कि पहले के लोग सूरज, चाँद और पैग़म्बरों के बारे में अक़ीदा रखते थे कि उनके बस में कुछ चीजें हैं और यह दे सकते हैं। जरा सोचों, उन लोगों पर सहाबा ने कैसे सहमति कर ली कि ये काफ़िर हैं और इन्हें कत्ल करना चाहिए। क्या तुम यह सोचते हो कि सहाबा मुसलमानों को काफ़िर मानते थे। या तुम्हारे दिमाग में यह है कि वलियों आदि के बारे में यह अक़ीदा रखना कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता और हज़रत अली रजि० के बारे में यदि कोई यह अक़ीदा रखे तो वह काफ़िर है अपनी अक्ल को सोचने का मौका क्यों नहीं देते ?

आप उनसे यह सवाल भी करें कि बनु अब्बास के ज़माने में जब बनू उबैदुलकाराह ने पश्चिम और मिस्र में अपनी हुकूमत क़ायम की सबके सब "लाइलाहा इल्लल्लाहू मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" की शहादत देते थे और वे इस्लाम के दावेदार थे नमाज़ पढ़ते थे और जुम्मे को जमाअत में शरीक होते थे। जब उन्होंने शरीअत के खिलाफ करना शुरू किया तो सारे ओलमा ने उनके कुफ्र का फ़तवा दिया यद्यपि तौहीद के मामले में जो हम ब्यान कर रहे हैं उन्होंने कोई खराबी पैदा नहीं की थी ओलमा ने उनके मुल्क को कुफ्रिस्तान कहा और दारेहर्ब बताया मुसलमानों ने उनसे जंग की यहाँ तक कि उनसे मुसलमानों का सारा इलाका छीन लिया।

उनसे यह भी कहा जाए कि पहले लोग इसलिए काफ़िर हुए कि उन्होंने शिर्क किया और कुरआन और रसूल को झुठलाया और उन्होंने क़ियामत के दिन दोबारा उठने से इन्कार किया यदि यही हाल है तो फिर हर मसलक के ओलमा ने इस चीज़ को अपनी किताबों में क्यों लिखा ?

باب حكم المرتد

अर्थात मुरतद के हुक्म के बयान में यह अध्याय है और तात्पर्य मुरतद यह है कि जो इस्लाम लाने के बाद कुफ्र करे। फिर इन ओलमा ने बहुत सी चीजें इस अध्याय के तहत बयान की हैं जो उनमें से हर चीज़ के बारे में इन्होंने न करने वाले पर मुरतद होने और काफिर होने का फ़तवा दिया है और एक ऐसी चीज़ के आधारपर उनकी जान व माल को हलाल समझा है। इस मामले में उन्होंने इतनी सख्ती से काम लिया है कि एक मामूली सी चीज़ भी यदि किसी ने अपनी ज़बान से निकाली है जो उसके दिल में नहीं या मज़ाक और खेल तमाशो के लिए एक कलिमा कह दिया है तो वह काफ़िर हो जाता है।

विरोधियों से यह भी कहा जाए कि अल्लाह ने कुछ लोगों को एक कलिचु कहने की वजह से ही दायरा-ए-इस्लाम से बाहर कर दिया है चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है :

"ये लोग अल्लाह की कस्में खाते हैं जो कुछ इन्होंने कहा है और अलबत्ता बेशक इन्होंने कुफ्र का कलिमा कहा है इसलिए वे इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गए।"

(सूरः तौबा - ७३)

जरा सोचिए अल्लाह ने इनको एक कलिमा कहने की वजह से काफिर कह दिया यद्यपि वे नबी करीम सल्ल० के जमाने में थे और ज़कात देते थे ये हज करते थे और ला इलाहा इल्लल्लाह कहते थे।

इसी तरह जब अल्लाह ने दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

"ऐ नबी इनसे कह दो कि क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक करते हो ?"

(सूरः तौबा : ६५-६६)

तुम हीले बहाने न बनाओ तुमने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है तो ये लोग ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए वे नबी सल्ल० के साथ तबूक की लड़ाई में शामिल थे, उन्होंने कोई बात

कह दी और नबी सल्ल० से कहा कि हमने तो दिल्लगी के लिए कहा था आपने देख लिया कि उनका बहाना कुबूल न किया गया।

विरोधियों के इस संदेह पर विचार करो कि वे कहते हैं कि तुम ऐसे लोगों को काफ़िर कहते हो जिन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है और वे नमाज़ पढ़ते हैं रोजा रखते हैं इसका जवाब हम नक़ल करते हैं इसे ध्यान से पढ़ो क्योंकि यह बड़ी अच्छी चीज़ है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसने इस्लाम के लिए बहुत कुछ किया है मगर मालूम होना चाहिए कि शिर्क करने से सारे कर्म बर्बाद हो जाते हैं और उसकी इबादत उसे कोई लाभ नहीं देती। इसलिए अल्लाह ने कुरआन में फ़रमाया है :

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ

(अलहज : ३१)

जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया वह ऐसा है जैसे कि कोई आदमी आसमान से गिरे और टुकड़े टुकड़े हो जाए इसी तरह मुशिरकों के कर्म सबके सब बबार्द हो जाते हैं।

इसके तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि अल्लाह ने बनी इस्राईल का किस्सा ब्यान फरमाया है कि उन्होंने इल्म के बावजूद और इस्लाम अपनाने के बावजूद हज़रत मूसा से कहा -

اِجْعَلْ لَنَا اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ

(अल-आराफ : १३८)

हमारे लिए भी कोई माबूद बना दो जैसा कि काफ़िरों के पास माबूद हैं और मुसीबत के समय वे उन्हें पुकारते हैं।

इसी तरह सहाबा ने नबी करीम सल्ल० से कहा कि हमारे लिए भी एक अनवात बना दो जैसे मुशिरकों के अनवात हैं मक्का के मुशिरक एक पेड़ के साथ अपने हथियार लटकाते थे उनका अकीदा था कि अब इन हथियारों में बरकत आ गयी है सहाबा ने भी हूज़ूर सल्ल० से इसी तरह के पेड़ के लिए इच्छा प्रकट की थी नबी सल्ल० ने सहाबा को जवाब दिया कि तुम्हारी मिसाल बनी इस्राईल

जैसी है जब उन्होंने कहा था कि ऐ मूसा हमारे लिए एक माबूद बना दो।

मुशिरकों के इस जवाब में संदेह है जो आम तौर पर वे पेश किया करते हैं कि बनी इस्राईल इसी आधार पर काफ़िर नहीं हुए थे और इसी तरह से सहाबा जिन्होंने नबी सल्ल० से अनवात की मांग की थी वे भी काफ़िर नहीं हुए थे यदि ऐसा होता तो इसकी कोई दलील कुरआन व सुन्नत में मिलती।

इसका जवाब यह है कि बनी इस्राईल ने केवल मांग की थी मगर हज़रत मूसा अलैहि० ने उस पर अमल नहीं होने दिया और उन्हें मना कर दिया। इसी तरह जिन्होंने नबी सल्ल० से सवाल किया था उनको भी आपने डांट दिया। जिस चीज़ की तमन्ना वे करते थे अमल में न आयी। इसमें कोई शक नहीं। यदि उनसे यह गलती हो गयी होती तो वे काफ़िर हो जाते और इसी तरह जिनको नबी सल्ल० ने मना फ़रमाया था यदि वे ऐसा करते तो वे भी काफ़िर हो जाते।

इस क़िस्से में बड़े फ़ायदे हैं। इस किस्से से मालूम हुआ कि कभी मुसलमान और आलिम भी शिर्क का शिकार हो जाता है मगर वह इसे जानता नहीं। इससे यह भी मालूम हुआ कि किसी आदमी का यह कह देना कि मैंने तौहीद को समझ लिया है बहुत जिहालत है और शैतान की चालों में से एक चाल है। इससे यह भी फ़ायदा हुआ कि यदि कोई मुसलमान काफ़िराना बात करे और वह उसे नहीं जानता है तो उसे सचेत करना चाहिए ताकि वह उसी समय तौबा कर ले ताकि वह काफ़िर न हो जाए जैसा कि बनी इस्राईल और नबी सल्ल० के सहाबा ने किया । इससे यह भी फ़ायदा हुआ कि यदि वह काफ़िर नहीं होता है मगर उसे बहुत डांट देनी चाहिए और उसे सख्ती से इस तरह के कलिमा से मना करना चाहिए जैसा कि नबी सल्ल० ने किया।

मुशिरकों का एक और बड़ा सन्देह है वे कहते हैं कि नबी

सल्ल० ने ओसामा की उस ग़लती को बहुत बुरा जाना जब उसने एक ऐसे आदमी को कत्ल कर दिया था जो लाइलाहा इल्लल्लाह कहता था नबी सल्ल० ने ओसामा से कहा कि तुमने कैसे इस आदमी को क़त्ल कर दिया जो कि ला इलाहा इल्लल्लाह कहता था। इसी तरह वे हुजूर सल्ल० के इस कथन से भी दलील पकड़ते हैं कि आपने फरमाया :

"उमिरतु अन उक़ातिलान्नासि हत्ता यकूलू ला इलाहा इल्लल्लाह"

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है कि मैं उस समय तक लोगों से जंग करता रहूंगा जब तक कि वे ला इलाहा इल्लल्लाह नहीं कहते

इस तरह की और हदीसें भी हैं जिससे यह साबित होता है कि नबी सल्ल० ने कलिमा पढ लेने वाले से हाथ रोकने का हुक्म फ़रमाया है क्योंकि वे मुसलमान हैं।

इन बेचारों को इस तरह की हदीसें पेश करने से मक़सद यह है कि जिसने ला इलाहा इल्लल्लाहु कह दिया काफ़िर नहीं होता चाहे वह कुछ भी करे और न ही उससे जंग की इजाज़त और न ही उसे कत्ल ही किया जा सकता है यह सब कुछ उनकी जिहालत की एक खुली हुई दलील है। इसके जवाब में उनसे यह कहा जाए कि नबी सल्ल० ने यहूदियों से जंग की और उन्हें कैद किया और गुलाम बनाया यद्यपि वे ला इलाहा इल्लल्लाह कहते थे और इसी तरह आपके सहाबा ने जो बनू हनीफ़ा से जंग की थी इसके बावजूद कि वे कलिमा शहादत पढते थे वे नमाजें अदा करते थे और इस्लाम के दावेदार थे इसी तरह से हज़रत अली रजि० ने जिन लोगों को आग में जलाया वे भी इस्लाम के दावेदार थे।

ये जाहिल कहते हैं कि जो दोबारा जिन्दा होने से इनकार करे वह क़त्ल कर दिया जाए चाहे उसने ला इलाहा इल्लल्लाहु कहा हो और इस तरह इस्लाम के स्तंभों में से किसी एक का भी इन्कार

करे तो वह उनके निकट क़त्ल किए जाने योग्य है चाहे वह बहुत बड़ा मुसलमान हो और कलिमा पढ़ता हो यह कैसे संभव हो सकता है कि यदि वह इस्लाम के स्तंभों में किसी चीज़ का इन्कार करें तो कलिमा उनको फ़ायदा पहुंचाए यद्यपि तौहीद ही दीन का आधार है और यही रसूलों का दीन और उनकी दावत का केन्द्र है मगर अफ़सोस है कि ये लोग हदीसों के अर्थ व भाव तक से परिचित नहीं हैं।

हज़रत उसामा ने जिस आदमी को क़त्ल किया वह एक ग़लतफ़हमी की वजह से था हज़रत उसामा ने यह सोचा कि इसने अपनी जान व माल के डर से कलिमा पढ़ा है अब कोई आदमी इस्लाम का ऐलान कर दे तो वाजिब हो जाता है कि उसके क़त्ल के इरादे को छोड़ दे यहां तक कि उससे यह जाहिर हो जाए कि उसने इस्लाम सच्चे दिल से कुबूल किया है या किसी वजह से इसी अवसर पर अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी :

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْ اِذَاحَرَبْتُمْ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا۔

(सूर: निसा : ९४)

"ऐ ईमान वालो जब तुम अल्लाह की राह में जंग के लिए निकलो तो तहक़ीक़ कर लिया करो। बिना किसी तहक़ीक़ के किसी को क़त्ल मत करो।"

तो यह आयत इस बात को स्पष्ट कर रही है कि जब तक तुम उसे इस्लाम के खिलाफ न देखो अपने हाथ रोके रखों, हां यदि वह इस्लाम के खिलाफ कुछ कर रहा हो तो फिर इजाज़त है कि उसके साथ जंग करो और यदि इस्लाम के विरोध करने पर भी उसे क़त्ल नहीं किया जाय तो फिर अल्लाह फरमाता है कि तहक़ीक़ कर लिया करो क्योंकि इसके मायने यहीं हैं कि यदि उससे इस्लाम के खिलाफ कुछ जाहिर हो तो फिर उसकी सज़ा क़त्ल ही है।

इसी तरह दूसरी हदीस जो इसी जैसे अर्थ रखती है उनका मतलब भी हम आपके सामने बयान कर चुके हैं कि जो तौहीद और

इस्लाम को जाहिर करे उससे हाथ उठा लिया जाए जब तक कि उससे इस्लाम के खिलाफ कुछ जाहिर न हो जाए। इसकी दलील यह है कि नबी सल्ल० ने उसामा से कहा कि क्या तुमने उसे क़त्ल कर दिया इस हालत में कि वह कलिमा पढ़ता था और दूसरी हदीस में आपने फ़रमया कि मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है कि में लोगों से उस समय तक जंग करता रहूँ जब तक कि वे ला इलाहा इल्लल्लाह नहीं कहते। जिस रसूल ने यह कहा है उसी ने हुक्म दिया है कि ख्वारिज को क़त्ल कर डालो :

"अयनमा नफिकतु मूहुम फकतुलहुम लइन अदरकतुम ल-अक तुलन्नहुम क-त-ला आदिन०

ये लोग जो कि ख्वारिज से ताल्लुक रखते हैं जहां कहीं भी तुम्हें मिल जाए उनको क़त्ल कर डालो यदि मुझ मिल जाएं तो मैं उनको क़ौमे आद की तरह क़त्ल करूँ इसके बावजूद कि ये लोग बड़ी इबादत करने वाले थे और हर समय अल्लाह के जिक्र में लगे रहते थे वे इबादत में इतने लीन रहते थे कि कभी कभी सहाबा अपने आपको उनके मुक़ाबले में कुछ नहीं समझते थे। ये वे लोग हैं जिन्होंने सहाबा से इल्म हासिल किया मगर इन तमाम चीज़ों के बावजूद कलिमा के पढ़ने ने उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाया न उनकी इबादत काम आयी और न इस्लाम का दावा करने ने उन्हें कुछ फ़ायदा दिया जब उनसे शरीअत विरोधी चीजें साबित हुई तो इस्लाम से निकल गए और मुसलमानों के लिए जरूरी हो गया कि वे उनसे जंग करके खत्म कर दें।

इसी तरह जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि नबी सल्ल० ने यहूदियों से जंग की और सहाबा ने बनू हनीफ़ा से जंग की इसके बावजूद कि वे ला इलाहा इल्लल्लाह कहते थे, इसी तरह से नबी सल्ल० ने बनू मस्तलक से जंग करने का इरादा किया क्योंकि किसी ने आप से कहा कि उन्होंने ज़कात अदा करने से इन्कार कर दिया है नबी सल्ल० ने उनसे जंग के लिए लश्कर तैयार किया उस समय

अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी

"या अययुहल्लज़ीन आमनू इन जा अकुम फस्किुन बिनबनइन फ-त-बययनू (अलहुजुरात)

ये लोग जो ईमान लाए हों यदि तुम्हारे पास कोई बे भरोसा आदमी खबर लाए तो उसकी तहक़ीक़ कर लिया करो। जिस आदमी ने यह खबर दी उसने झूठ बोला था इसलिए नबी सल्ल० ने उनसे जंग का इरादा किया जब आपको मालूम हुआ कि यह खबर गलत है तो उनसे किसी प्रकार जंग न की बल्कि वे मुसलामनों की जंमाअत में शामिल थे। इन आयतों और हदीसों से साफ तौर पर स्पष्ट होता है कि जिससे ये लोग दलीलें पकड़ते हैं कि नबी करीम सल्ल० की मुराद क्या थी।

यह एक और संदेह भी पेश किया करते हैं वह यह कि नबी सल्ल० ने फरमाया कि क़्यामत के दिन लोग हज़रत आदम अलैहि० के पास जाऐंगे और फ़रियाद करेंगे। इसके बाद हज़रत नूह अलैहि० और हज़रत इब्राहीम, मुसा व हज़रत ईसा अलैहि० के पास आयेंगे कि वे अल्लाह के यहां उनकी सिफ़ारिश करें सबके सब मजबूरी पेश करेंगे कि हमें अल्लाह से डर लगता है कि कहीं वे हमसे नाराज़ न हो जाए। इसके बाद वे नबी सल्ल० के पास आयेंगे।

इस हदीस से वे दलील पकड़ते हैं कि गैर अल्लाह से विनती करना या फरियाद करना शिर्क नहीं है।

इसका जवाब यह है कि अल्लाह ने इनकी अकलों पर ऐसे परदे डाले हैं कि हक़ बात उन्हें नज़र ही नहीं आती। मखलूक से उन चीजों के बारे में फरियाद करना जिसकी वे ताक़त रखते हैं कोई भी मुन्किर नहीं जैसा कि अल्लाह ने हज़रत मूसा के क़िस्से में बयान फ़रमाया है।

"فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيْعَتِهِ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ عَدُوِّهِ"

(सूर: क़सस : १५)

तो जो हज़रत मूसा अलैहि० की कौम में था उसने हज़रत मूसा से मदद मांगी उस आदमी पर जो उसके दुश्मनों में से था। इसी तरह से इन्सान जंग में अपने साथियों से मदद मांगता है जिसकी ताकत वह रखता है। हम जिस इस्तग़ासा का इन्कार करते हैं वह यह है कि जैसे ये लोग वलियों की कब्रों पर जाकर सर झुकाते हैं और फ़रियाद करते हैं जो कि एक इबादत है और वह अल्लाह के लिए खास है या फिर उनको उस समय पुकारते हैं जबकि वे मौजूद नहीं बल्कि वे कब्रों में सोये पड़े हैं और फिर इस्तग़ासा भी ऐसी चीजों का करते हैं जिसका उन्हें कोई अधिकार भी नहीं है बल्कि वे सब चीजें अल्लाह के अधिकार में हैं।

जब यह चीज़ स्पष्ट हो गयी है तो फिर यह समझ लीजिए कि इनका नबियों से कियामत के दिन फ़रियाद करना केवल इसलिए होगा कि वे अल्लाह से दुआ मांगे कि लोगों का हिसाब किताब लेले ताकि जन्नत में आने वाले आराम से जन्नत में जाएं और हश्र के मैदान की मुसिबतों से निजात हासिल कर लें और यह चीज़ दुनिया में भी और आखिरत में भी जायज़ है कि कोई आदमी किसी बुजुर्ग के पास आए और उसे कहे कि मेरे लिए अल्लाह से दुआ मांगो जैसे कि हुजूर सल्ल० के सहाबा आपसे दुआ की दरख्वास्त किया करते थे और यह केवल नबी करीम सल्ल० की जिन्दगी में था। आपकी वफात के बाद कभी भी किसी आदमी ने आपसे किसी तरह की कोई दुआ नहीं मांगी और न ही आपकी कब्र के पास जाकर किसी ने फरियाद की बल्कि सहाबा किराम और सल्फ सालिहीन उस आदमी को बहुत बुरा जानते थे जो नबी करीम सल्ल० की कब्र के पास जाकर दुआ मांगे जब यह बात स्पष्ट हो गयी है तो कैसे साबित हो सकता है कि कोई आदमी अल्लाह को छोड़कर केवल नबी करीम सल्ल० से ही आपकी फ़रियाद तलब करो।

उनकी एक आपत्ति और संदेश यह भी है कि जब इब्राहीम

अलैहि० को नमरूद ने आग में फेंका था तो हज़रत जिब्रील अलैहि० उनके सामने आए और कहा कि यदि आपको कोई हाजत है तो बयान करो। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने कहा कि तुम सबसे कोई हाजत नहीं है। वे कहते हैं कि यदि ग़ैर इस्तग़ासा शिर्क होता तो हज़रत जिब्रील अलैहि० अपने आपको हज़रत इब्राहीम अलैहि० को पेश न करते।

इस आपत्ति का जवाब यह है कि यह संदेह भी पहले सन्देह से मिलता जुलता है। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने अपने आपको हज़रत इब्राहीम अलैहि० के सामने पेश किया था ताकि उनको कोई फ़ायदा पहुंचाऐं जिसकी वह अपने अन्दर ताकत रखता था जैसा कि अल्लाह ने हज़रत जिब्रील की शान में फरमाया है : شهيد القبح (सूर: नज्म : ५) वह बड़ी ज़बरदस्त कुव्वत वाला है।

यदि हज़रत इब्राहीम उसे इजाज़त दे देते तो वह आग और उसके आसपास की सारी चीज़ों को उठाकर पूरब या पश्चिम में फेंक सकता था और यदि अल्लाह उसे हुक्म देता तो वह हज़रत इब्राहीम को पकड़कर किसी बहुत दूर जगह में रख देता और वे लोग देखते रह जाते और यदि उसे हुक्म देता कि आसमानों में उठा लाओ तो हज़रत जिब्रील इसकी भी ताक़त रखते थे।

इसकी मिसाल एक मालदार की सी मिसाल है कि जिसके पास बहुत ज्यादा माल व दौलत है वह किसी मोहताज को देखकर कहता है कि तुम मुझ से कुछ रकम कर्ज लेकर काम चलाओ या उसे एक रक्म हिबा कर देता है मगर वह आदमी लेने से इनकार कर देता है और वह सब्र करता है और अपने अल्लाह से उम्मीद रखता है कि वह उसे रिज़्क़ देगा जिसमें उसे किसी का एहसान नहीं उठाना पड़ेगा। इस तरह का इस्तग़ासा इबादत में कैस दाखिल हो सकता है और इसे शिर्क कैसे कहा जा सकता है, काश उन लोगों के पास समझने वाले दिल मौजूद होते।

बहस खत्म करने से पहले एक बहुत बड़ा मसला जिसका

बयान करना बड़ा जरूरी है यहां बयान किया जाता है यद्यपि वह मसला पिछली बहस में किसी हद तक स्पष्ट हो चुका है फिर भी उसकी महानता यह्न तक़ाज़ा करती है उसे अलग ही बयान किया जाए। इस चीज़ में किसी का भी मतभेद नहीं कि तौहीद के लिए जरूरी है कि उसका संबन्ध दिल से भी हो और ज़ुबान से भी इक़रार किया जाए और इस पर अमल भी किया जाए। यदि इन चीज़ों में से एक चीज़ भी बर्बाद हो गयी तो फिर कोई भी आदमी मुसलमान नहीं रह सकता। यदि किसी ने तौहीद को पहचान लिया मगर इस पर अमल नहीं किया तो वह काफ़िर है और इस्लाम का दुश्मन है उसमें और फिरऔन में कोई फ़र्क़ नहीं यहां तक कि इबलीस और उसमें कोई फ़र्क़ नहीं। यह मसला ऐसा है कि इसमें बहुत से लोग गलती करते हैं वे कहते हैं कि इसमें कोई शक नहीं, यह मसला ठीक है और ऐसा ही है और हम इसे खूब अच्छी तरह से समझते हैं मगर हमारे लिए इस पर अमल करना बड़ा मुश्किल है। हमारी बस्ती के लोग जब तक कि हम उनके साथ पूरी तरह सहमत न हों हमारा वहां रहना बड़ा मुश्किल है। इसी तरह के कई अन्य कारण वह बताने के लिए तैयार रहता है। मगर वह मिस्कीन इतना भी नहीं जानता कि अधिकांश कुफ़्र के बड़े चौधरी हक को पूरी तरह पहचानते थे मगर इसके बावजूद उन्होंने हक की पैरवी करने से केवल इसलिए इन्कार किया कि उन्हें इस प्रकार की हीले बहाने ही बनाने थे जैसे कि अल्लाह ने अपने इर्शाद में उनके बारे में फ़रमाया :

"इशतरू बि आयातिल्लाहि स-म-नन कलीलन०"

(आले इमरान : १९९)

अर्थात उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत थोड़ी क़ीमत देकर खरीदा है और दूसरी जगह अल्लाह ने फ़रमाया :

"याअरिफूनहु कमा यारिफूना अब ना अहुम"

(सूर: बकरा : १४६)

ये लोग पैग़म्बर और इस्लाम को इस तरह से जानते हैं जैसे कि वह अपने बेटों को पहचानते हैं अर्थात इन्हें इस्लाम के हक़ होने में कोई शक नहीं है।

हां, इसके अलावा किसी आदमी ने दिखावे के लिए तौहीद पर अमल किया मगर वह उसे समझता नहीं है और न ही दिल में उसका विश्वास ही रखता है तो वह कपटाचारी है और इसी प्रकार का आदमी काफ़िर से भी अधिक बुरा है क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है :

"इन्नल मुनाफिकीना फिद दरकिल असफलि मिनन्नारि"

(सूर: निसा)

अर्थात कपटाचारी क़ियामत के दिन जहन्नुम के सबसे निचले वर्ग में होंगे। यह मसला बहुत लम्बा चौड़ा है यदि तुम इस पर विचार करो तो तुम्हारे लिए यह आप से आप स्पष्ट हो जायेगा। तुम लोंगों की जबानों से महसूस करोगे कि वे हक़ को पहचानते हैं मगर अमल नहीं करते, इसलिए कि इस पर अमल करने से उनके सांसारिक हितों में फ़र्क़ आता है या फिर वह अपने दर्जे वे मरतबे से डरते हैं और उसे बाक़ी रखने के लिए दूसरों की आवभगत करते हैं और हक़ को छिपाते हैं और अमल नहीं करते। इस तरह से कुछ आदमी आपको ऐसे भी मिलेंगे कि दिखावे का अमल तो करते हैं मगर असल में उनका हाल कुछ और ही होता है।

यदि आप दुनिया व आखिरत का अज्र हासिल करना चाहते हैं तो कम से कम इन दो आयतों का अर्थ समझ लो। पहली आयत यह है :

"ला ताअजिरू कद कफरतुम बाअदा ईमानिकुम"

(सूर: तौबा : ६६)

"और बहाने न बनाओ। तुमने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है।"

यदि आप तहक़ीक़ करें तो आपको मालूम हो जाय कि कुछ

सहाबा नबी करीम सल्ल० से मिलकर रूमियों से जिहाद करने के लिए निकले रासते में उन्होंने मज़ाक और हास्य के तौर पर एक ऐसा कलिमा कह दिया कि जिसकी वजह से अल्लाह ने उन्हें इस्लाम से निकालकर कुफ्र में दाखिल कर दिया। यह चीज़ ज़ाहिर है कि एक आदमी कुफ्रिया बात करता है और इस पर लोगों से डरते हुए फिर दुनिया के लालच में आकर अमल भी करता है। उसका कुफ्र इस आदमी से बढ़ा हुआ है जो मज़ाक के तौर पर एक कलिमा कह देता है।

दूसरी आयत यह है कि अल्लाह फ़रमाता है :

"जिस आदमी ने ईमान लाने के बाद कुछ किया सिवाए उसके कि जिसे मजबूर किया गया हो और दिल उसका ईमान से सन्तुष्ट हो लेकिन उसका सीना कुफ्र के लिए खोल दिया हो। उस पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ा अज़ाब है यह इसलिए कि उन्होंने दुनिया की जिन्दगी को आखिरत पर प्रमुख्ता दी।"

(सूरः नहल-१०६)

इस आयत से स्पष्ट हुआ कि अल्लाह उस आदमी को तो मजबूर समझता है जिसे कुफ्र के लिए कोई मजबूर करे। वह अपनी ज़बान से कुफ्रिया कलिमें निकाल दे मगर दिल में उसके ईमान मौजूद हो मगर उसके अलावा जो आदमी कुफ्रिया कलिमें इसलिए कहता है कि उसे दुनिया मिलती है या किसी के डर से या किसी की खातिर मदारत के लिए कि कहीं वह उससे नाराज़ न हो जाए या अपने वतन और अपने घर वालों और माल व दौलत को बाकी रखने के लिए कुफ्र ज़ाहिर करे चाहे उसे इसका यकीन भी हो तो उसके कुफ्र में किसी प्रकार का संदेह नहीं या मज़ाक के तौर पर और किसी खास वजह से कुफ्र के कलिमें कहे और इस्लाम के विरोध का प्रदर्शन किया तो मुसलमान नहीं रहता सिवाय उसके जो इस पर मजबूर किया जाय मगर दिल उसके अन्दर का ईमान के

लिए सन्तुष्ट हो वह इन्शा अल्लाह ईमान पर ही है।

इस मस्ले पर यह आयतें दो तरह से रौशनी डालती है एक तो यह कि अल्लाह के कथन में من اكره जिस आदमी को मजबूर किया जाए। अल्लाह ने उस आदमी को जिस पर ज़बरदस्ती की जाय उसे इस पकड़ से छोड़ दिया है यह मालूम है कि इन्सान से कोई बात या कोई काम तो जबरदस्ती कराया जा सकता है मगर अक़ीदा कि जिसका ताल्लुक़ दिल के साथ है उस पर कोई ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती। दूसरी चीज़ यह कि अल्लाह ने फ़रमाया :

"ज़ालिका बि अन्नहमुस्तहब्बूल हयातद दुनिया अलल आखिरति०"

(सूरः नहल : १७)

"उन्होंने दुनिया की जिन्दगी को अखिरत पर प्रमुख्ता दी।" इसमें इस बात की ब्याख्या कर दी है कि उनका कुफ्र और अज़ाब किसी आस्था या जिहालत या दीन से दुश्मनी या कुफ्र से मुहब्बत के कारण नहीं था बल्कि उसका कारण यह था कि उन्होंने दीन पर दुनिया की रंगीनियों व चमक दमक को प्रमुख्ता दी थी।

والله تعالیٰ عالم و أكرم و صلى الله على نبينا محمد و على آله و اصحابه و سلم۔